डी.ए.वी. कॉलेज, होशियारपुर के पुरस्कार वितरण समारोह में भाषण

---

7 मार्च, 2020

डी.ए.वी. कॉलेज, होशियारपुर

डी.ए.वी. कॉलेज, होशियारपुर के इस पुरस्कार वितरण समारोह में आप सबके बीच आकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। इस महत्वपूर्ण समारोह में भाग लेने के लिए मुझे निमंत्रण देने के लिए मैं कालेज प्रबंधन का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। शिक्षा प्राप्त कर रहे युवा छात्रों से मिलना और उनके बीच आना हमेशा ही खुशी की बात होती है। उनसे संवाद करके मानो हम भी ऊर्जा से भर जाते हैं।

पूरे वर्ष छात्र इस दिन का इंतज़ार करते हैं। यह दिन आप सबके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आज का दिन आप सभी युवा प्रतिभाओं को सम्मानित करने का है। इस शुभ अवसर पर मैं इस संस्था से जुड़े सभी लोगों को, और विशेषकर आज पुरस्कृत होने वाले विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ। मैं उन शिक्षकों और अभिभावकों को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने देश के लिए ऐसी प्रतिभाएं तैयार की हैं जो आगे चलकर भारत के भविष्य का निर्माण करेंगे।

प्यारे छात्रो! डी.ए.वी. यानी दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज शिक्षा के क्षेत्र में एक बहुत ही प्रतिष्ठित नाम है और निजी क्षेत्र में भारत का सबसे बड़ा शिक्षण संस्थान है। डी.ए.वी. समूह आध्यात्मिक उपदेशक एवं समाज सुधारक स्वामी दयानंद सरस्वती के विचारों पर आधारित है और स्कूली शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक की शिक्षा देता है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती उन्नीसवीं शताब्दी के एक महान संत थे। उन्होंने भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक उत्थान में अमूल्य योगदान दिया। वे आर्य समाज के संस्थापक के रूप में सदा पूजनीय हैं और पूजनीय रहेंगे।

स्वामी दयानंद जी महान देशभक्त एवं मार्गदर्शक थे, जिन्होंने अपने कार्यों से समाज को नयी दिशा एवं ऊर्जा दी। महात्मा गांधी जैसे कई महापुरुष भी स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विचारों से प्रभावित थे।

स्वामी जी ने जीवन भर वेदों और उपनिषदों के ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया और संसार के लोगों को उस ज्ञान से लाभान्वित किया। उनका सूत्र वाक्य था – 'वेदों की ओर लौटो'।

आप सब जानते होंगे कि स्वामी दयानंद जी एवं आर्य समाज ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से राष्ट्रीय आन्दोलन को बड़े पैमाने पर प्रभावित किया।

उनके शिक्षण संस्थान डी.ए.वी. में समता, स्वतंत्रता, स्वावलंबन और स्वाभिमान की शिक्षा देकर राष्ट्रीय भावनाओं को उभारा जाता है और चारित्रिक सबलता का पाठ पढ़ाकर भारतीय संस्कृति के प्रति गौरव की भावना जागृत की जाती है।

हमारे देश में आज भी डी.ए.वी. संस्था इसी दिशा में आगे बढ़ कर शिक्षा और संस्कार दोनों को आगे ले जा रही है। आप लोग सौभाग्यशाली हैं कि आपको यहाँ पंजाब के सबसे ज्यादा साक्षरता वाले जिले होशियारपुर के इस प्रसिद्ध कॉलेज में शिक्षा ग्रहण करने का अवसर मिला है।

मुझे बताया गया है कि इस संस्था को यूजीसी द्वारा NAAC 'A' की श्रेणी में रखा गया है। इंडिया टूडे द्वारा हाल ही में हुई एक सर्वे में इसे भारत के शीर्ष 100 कॉलेजों में स्थान मिला है। यहाँ एकेडमिक्स के अतिरिक्त खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम और कौशल विकास की तमाम सुविधाएं आपके लिए उपलब्ध हैं।

देवियो और सज्जनो! शिक्षा अनेक उद्देश्यों की पूर्ति करती है । ज्ञान और कौशल प्रदान करने के साथ-साथ शिक्षा में सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक बदलाव लाने की शक्ति भी है। यह बदलाव लाने का माध्यम होने के अतिरिक्त विचारों और विकास प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में भी अपनी भूमिका निभाती है। यह हमें विवेकशील बनाती है। शिक्षा किसी भी व्यक्ति के जीवन में प्रत्याशित परिवर्तन लाने का सर्वोत्तम माध्यम है।

शिक्षा में जीवन स्तर में सुधार लाने की क्षमता है । शिक्षा प्राप्त करने से बौद्धिक विकास होता है और जागरुकता उत्पन्न होती है । इसलिए शिक्षा ऐसा सशक्त माध्यम है जिसमें क्रांति लाने की क्षमता होती है। व्यक्तियों की शिक्षा से समाज शिक्षित होता है और शिक्षित समाज से पूरे देश का उत्थान होता है।

यदि अर्थव्यवस्था किसी राष्ट्र का आधार होती है, तो शिक्षा निस्संदेह उसकी जीवन रेखा होती है। आधुनिक युग विज्ञान का युग कहलाता है। औद्योगिक क्रांति और हरित क्रांति से औद्यौगिक और कृषि उत्पादन कई गुना बढ़ गया है तथा सूचना और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुई क्रांति ने विश्व में दूरियां खत्म कर दी हैं। इसी के अनुपात में रोजगार के नए अवसर पैदा हुए हैं तथा बड़े पैमाने पर लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है।

अतः, शिक्षा के क्षेत्र में निवेश करके हम बदलते हुए विश्व के साथ कदम से कदम मिलाकर चल सकते हैं और सुनिश्चित कर सकते हैं कि हम किसी से पीछे नहीं हैं ।

शिक्षा में निवेश सर्वोत्तम निवेश है। प्राथमिक शिक्षा हो अथवा उच्च शिक्षा - इन्हें हमारे राष्ट्रीय एजेंडा में सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। गत वर्षों के दौरान, हमने समाज में प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा प्रदान करने के लिए पूरी निष्ठा से प्रयास किए हैं।

वर्ष 2009 में, हमारी संसद ने 86वें संवैधानिक संशोधन के माध्यम से शिक्षा का अधिकार कानून बनाया और शिक्षा को एक मूल अधिकार बनाया। भारत सरकार ने हाल ही में *'समग्र शिक्षा'* नामक अभियान शुरू किया है जिसके अंतर्गत मौजूदा तीन योजनाओं अर्थात् सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए), राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (आरएमएसए)और 'टीचर एजुकेशन' (टीई) को शामिल किया गया है। इसका उद्देश्य विद्यालयी शिक्षा के समान अवसर प्रदान करना और शिक्षा के एक समान परिणाम प्राप्त करने की दृष्टि से विद्यालयों की कार्यक्षमता में सुधार करना है। हमारा उद्देश्य है -'सब पढ़े, सब बढ़े '।

इसके अतिरिक्त, एक ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा नीति तैयार की जा रही है जिसका उद्देश्य वर्तमान शिक्षा प्रणाली के सामने आ रहीं, पहुंच, समता, गुणवत्ता, वहनीयता और जवाबदेही जैसी चुनौतियों का समाधान करना है। इस प्रारूप नीति का उद्देश्य विद्यालय से लेकर उच्चतर शिक्षा के सभी स्तरों पर सुधार करना है। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा

के अतिरिक्त, समान अवसर और सभी को शामिल करते हुए उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में भी मानव संसाधन की पूर्ण क्षमता का उपयोग सुनिश्चित करने का हमारा उद्देश्य है।

हम इस संबंध में नए कॉलेजों की स्थापना करके और विश्वविद्यालयों के स्तर में सुधार करके उच्चतर शिक्षा का प्रचार-प्रसार करने और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने का लगातार प्रयास कर रहे हैं।

आज यहां मैं छात्राओं की भी प्रशंसनीय उपस्थिति देख रहा हूँ। हमने महिलाओं को अपने समाज में उचित स्थान प्रदान करने का प्रयास किया है। उनके लिए बेहतर स्वास्थ्य और शिक्षा हमारी प्राथमिकता है। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसी योजनाएं लागू होने के बाद हम समाज में हो रहे सकारात्मक बदलाव देख सकते हैं। मैं इस कहावत में पूरी तरह विश्वास करता हूं कि एक महिला को शिक्षित करके आप एक पूरे परिवार को शिक्षित कर देते हैं।

शिक्षा का एक व्यापक उद्देश्य है। केवल आजीविका कमाना शिक्षा का उद्देश्य नहीं हो सकता। आजीविका एक व्यक्तिगत एवं पारिवारिक आवश्यकता तो है परंतु इससे भी ऊपर उठकर शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जो समाज में योगदान दे और सबके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाए।

मेरा मानना है कि हमें ऐसी शिक्षा की जरूरत है जो हमारे सोच के दायरे को विस्तार दे और हमारी विचारधारा को उदार बनाए और नवोन्मेषी बनाए। शिक्षा में इस बात पर बल दिया जाना चाहिए कि वह हमें जीवन और समाज की चुनौतियों का सामना करने के लिए किस प्रकार तैयार करती है। अच्छी शिक्षा ही हमें बेहतर नागरिक बनाती है।

मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि डीएवी कॉलेज, होशियारपुर 1926 से ही देश और पंजाब के लोगों की सेवा कर रहा है। इसका उद्देश्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जो स्नेह, शांति, सद्भावना, सौहार्द, न्याय और विकास पर आधारित हो।

मैं सभी जातियों, नस्लों और सामाजिक-आर्थिक वर्गों के छात्रों को बिना भेदभाव गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के कॉलेज के इस अभियान की हार्दिक सराहना करता हूँ। इस अवसर पर मुझे डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा कहे गए शब्द याद आ रहे हैं। उन्होंने कहा था कि- "*विश्वविद्यालय को सदैव ज्ञान की सीमाओं का विस्तार करने और अन्य उपायों से देश के बौद्धिक जीवन को सुदृढ़ बनाने में सहायता करनी चाहिए। उसका प्राथमिक कर्तव्य यह होना चाहिए कि अपने अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले विद्यालयों और महाविद्यालयों के साथ घनिष्ठ सहयोग से कार्य करते हुए स्वयं को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से छात्र समुदाय के प्रगतिशील कल्याण के प्रति समर्पित कर दे।*"

आज के समय में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि छात्रों में आदर्शवादी नैतिकता की भावना विकसित की जाए ताकि वे हमारे पूर्वजों द्वारा अपनाई गई सांस्कृतिक विविधता में एकता की विरासत को आगे बढ़ा सकें।

पंजाब गुरू नानक देव जी जैसे महान गुरुओं की भूमि रहा है, जिन्होंने हमेशा सभी के लिए प्रेम और समानता के विचार को बढ़ावा दिया। ऐंग्लो-वैदिक सांस्कृतिक समाज की स्थापना के स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों को, उनके दृष्टिकोण और मिशन को आगे बढ़ाते हुए, डीएवी कॉलेज की प्रबंध समिति बहुत प्रशंसनीय काम कर रही है।

अपनी बात समाप्त करने से पहले, मैं मूल्य-आधारित शिक्षा की आवश्यकता को दोहराना चाहता हूं। हमारी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो हमारे युवाओं को हमारी संस्कृति और मूल्यों के बारे में जानकारी दे, उन्हें अच्छे और बुरे का फर्क समझने के लायक बनाए और उन्हें इतना चरित्रवान बनाए कि वे जीवन में सही निर्णय ले सकें।

हमें अपने युवाओं का दृष्टिकोण ऐसा बनाना होगा जिसमें आधुनिकता के साथ-साथ हमारी परंपराओं का भी मेल हो ताकि हमारी युवा पीढ़ी का नैतिक चरित्र सुदृढ़ हो; वे उच्च आदर्शों का पालन करें और उनका दृष्टिकोण प्रगतिशील हो। हमारे युवा हमारी सबसे बड़ी सपत्ति हैं, इसलिए यह जरूरी है कि हम उन्हें अपनी सबसे बड़ी ताकत में बदलें।

मेरे युवा मित्रो, जैसा आप सभी जानते हैं कि सीखना एक सतत् प्रक्रिया है। स्कूली शिक्षा के बाद भी हमारी शिक्षा जारी रहती है। इस विश्वविद्यालय के बाहर, चुनौतियों और अवसरों से भरी एक बिल्कुल नई और रोमांचक दुनिया आपका इंतजार कर रही है। इस विश्व में आपकी शिक्षा और आत्मविश्वास आपके दो पंख होंगे एवं अपने साहस के बल पर आप लम्बी उड़ान भरेंगे और अपने सपने पूरे करेंगे।

मुझे विश्वास है कि इस विश्वविद्यालय ने आपको आपके सपने और आकांक्षाएं पूरी करने तथा आगे जीवन में आने वाली चुनौतियों और उतार-चढ़ावों का डटकर सामना करने के लिए अच्छे से तैयार किया है।

अपने कठिन परिश्रम और गंभीर प्रयासों से अपनी पढ़ाई में उत्कृष्टता हासिल करने वाले सभी छात्रों को मैं हार्दिक बधाई देता हूं। मैं आज पुरस्कार पाने के लिए चुने गए छात्रों को भी बधाई देता हूं।

मुझे आशा है कि यह उत्कृष्ट संस्थान इसी प्रकार समर्पित, जिम्मेदार, अनुशासित, प्रतिभाशाली और सामाजिक रूप से संवेदनशील नागरिक तैयार करता रहेगा, जो हमारे देश की बहुमूल्य निधि बनेंगे। मैं आप सभी को सुनहरे भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

धन्यवाद।

———